न्यू हॉराइज़न स्कूल

सहायक सामग्री

कक्षा दसवीं

विषय : हिंदी

सत्र 2018-2019

सामायिक परीक्षा-1,2,3 व वार्षिक

पाठ-बड़े भाई साहब

विधा-कहानी

लेखक मुंशी प्रेमचंद

'बड़े भाई साहब' कहानी प्रेमचंद द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखी एक श्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी में उन्होंने बड़े भाई साहब के माध्यम से घर में बड़े भाई की आदर्शवादिता के कारण उसके बचपन के तिरोहित होने की बात कही है। बड़ा भाई सदा छोटे भाई के सामने अपना आदर्श रूप दिखाने के कारण कई बार अपने ही बचपन को खो देता ह।

बड़े भाई साहब और उनके छोटे भाई में पाँच वर्ष का अंतर है किंतु वे अपने छोटे भाई से केवल तीन कक्षाएँ ही आगे हैं। बड़े भाई साहब सदा पढ़ाई में डूबे रहते हैं, लेकिन उनका छोटा भाई खेलकूद में अधिक मन लगाता है। दोनों भाई होस्टल में रहते हैं। बड़े भाई साहब प्राय: छोटे भाई को उसकी खूलकूद में अधिक रुचि के कारण डाँटते रहते हैं। वे उसे उनसे सीख लेने की बात कहते हैं। उनका कहना है कि वे बहुत मेहनत करते हैं। वे खेलकूद और खेल-तमाशों से दूर रहते हैं। अत: उसे उनसे सबक लेना चाहिए। वे छोटे भाई से कहते हैं कि यदि वह मेहनत नहीं कर सकता तो उसे घर वापिस लौट जाना चाहिए। उनकी ऐसी बातें सुनकर छोटा भाई निराश हो जाता है। कुछ देर बाद वह जी लगाकर पढ़ने का

निश्चय करता है और एक टाइम-टेबिल बना लेता है। वह अपने इस टाइम-टेबिल में खेलकूद में फिर से मस्त हो जाता है और बड़े भाई साहब की डाँट और तिरस्कार में भी वह अपने खेलकूद को नहीं छोड़ पाता है।

कुछ समय बाद वार्षिक परीक्षाएँ हुईं। बड़े भाई साहब तो कठिन परिश्रम करके फेल हो गए किंतु छोटा भाई प्रथम श्रेणी में पास हो गया। धीरे-धीरे छोटा भाई खेलकूद में अधिक मन लगाने लगा। बड़े भाई साहब से यह देखा नहीं गया। वे उसे रावण का उदाहरण देकर समझाते हैं कि घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड करने से रावण जैसे चक्रवर्ती राजा का अस्तित्व मिट गया था। शेतान और शाहेख़ान भी अधिमान के कारण ही नष्ट हो गए थे। छोटा भाई उनके इन उपदेशों को चुपचाप सुनता रहा। वे कहते हैं कि उनकी नौंवीं कक्षा की पढ़ाई बहुत कठिन है। अंग्रेज़ी, इतिहास, गणित तथा हिंदी आदि विषयों में पास होने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। उन्होंने अपनी कक्षा की पढ़ाई का ऐसा भयंकर चित्र खींचा कि छोटा भाई बुरी तरह से डर गया।

दोबारा वार्षिक परीक्षाएँ हुई। इस बार भी बड़े भाई साहब फेल हो गए और छोटा भाई पास हो गया। बड़े भाई साहब बहुत दुःखी हुए। छोटे भाई की अपने बारे में यह धारणा बन गयी कि वह तो चाहे पढ़े या न पढ़े, वह तो पास हो ही जाएगा। अतः उसने पढ़ाई करना बंद करके खेलकूद में ज़्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया। बड़े भाई साहब भी अब उसे कम डाँटते थे। धीरे-धीरे छोटे भाई की स्वच्छंदता बढ़ती गई। उसे पतंगबाज़ी का नया शौक लग गया। अब वह सारा समय

पतंगबाज़ी में नष्ट करने लगा किंतु वह अपने इस शौक को बड़े भाई साहब से छिपकर पूरा करता था।

एक दिन एक पतंग लूटने के लिए पतंग के पीछे-पीछे दौड़ रहा था कि अचानक बाज़ार से लौट रहे बड़े भाई साहब से टकरा गया। उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे डाँटते हुएकहा कि अब वह आठवीं कक्षा में है। अतः उसे अपनी पोज़ीशन का ख्याल करना चाहिए। पहले ज़माने में तो आठवीं पास नायब तहसीलदार तक बना जाया करते थे। बड़े भाई साहब उसे समझाते हुए कहते हैं कि जीवन में किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का अनुभव होता है और उन्हें उससे कहीं ज़्यादा अनुभव है। वे अपने माँ-दादा और अपने स्कूल के हेडमास्टर साहब और उनकी माँ का उदाहरण देकर बताते हैं कि ज़िंदगी में केवल किताबी ज्ञान से ही काम नहीं चलता अपितु ज़िंदगी की समझ भी ज़रूरी होती है जो केवल अनुभव से आती है।

बड़े भाई साहब के ऐसा समझाने पर छोटा भाई उनके आगे नतमस्तक होकर कहता है कि वे जो कुछ कह रहे हैं, वह बिलकुल सच है। बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को गले लगा लेते हैं। वे कहते हैं कि उनका भी मन खेलने-कूदने का करता था लेकिन यदि वे ही खेलने-कूदने लगेंगे तो उसे क्या शिक्षा दे पाएंगे? तभी उनके ऊपर से एक कटी हुई पतंग गुज़रती है जिसकी डोर नीचे लटक रही थी। बड़े भाई साहब ने लंबे होने के कारण उसकी डोर पकड़ ली

और तेज़ी से होस्टल की और दौड़ पड़े। उनका भाई भी भी उनके पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

पाठ-डायरी का एक पन्ना

विधा-डायरी/लेख

लेखक-सीताराम सेकसरिया

प्रस्तुत पाठ 'डायरी का एक पन्ना' उसके द्वारा 26 जनवरी, 1931 के दिन लिखी गई डायरी का एक अंश है। 26 जनवरी, 1931 को कोलकातावासियों ने दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया। अंग्रेज़ी सरकार ने क्रांतिकारियों पर लाठियाँ बरसाईं और खूब अत्याचार किए। इस पाठ में उस दिन की सारी घटना का विस्तृत वर्णन है।

लेखक कहता है कि 26 जनवरी, 1931 का दिन अमर दिन था। इस दिन केवल कोलकाता में ही नहीं पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस की द्वितीय वर्षगाँठ मनाई गई। यद्यपि उस समय भारत गुलाम था किंतु 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस की द्वितीय वर्षगाँठ मनाई गई। यद्यपि उस समय भारत गुलाम था किंतु 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा के बाद इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था। 26 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस मनाने की पूरी तैयारी की गई थी। कोलकातावासियों ने इस दिन को अपूर्व बना दिया था। उस दिन वहाँ के सभी लोगों के घरों में राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। कांग्रेस कौंसिल ने नोटिस निकाला कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। उधर पुलिस कमिश्नर ने

भी स्पष्ट कर दिया कि ऐसी किसी भी सभा में शामिल होना अपराध है। यदि कोई सभा में शामिल हुआ तो उसे दोषी समझा जाएगा। सभा होने से रोकने के लिए पुलिस का भारी संख्या में प्रबंध भी कर दिया गया।

उस दिन मोनुमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होनी थी, उस जगह को प्रातः काल से ही घेर लिया गया। बंगाल प्रांतीय विद्यर्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जब श्रद्धानंद पार्क में झंडा गाढ़ा तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह को तो झंडा फहरान के लिए घुसने ही नहीं दिया गया। गुजराती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकालने वाली लड़कियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। उधर सुभाष चंद्र बोस के जुलूस का प्रबंध करने वाले पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय को भी गिरफ्तार कर लिया गया। उस दिन ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष चंद्र बोस जुलूस लेकर जब चौरंगी पहुँचे तो उन्हें वहीं रोक लिया गया। उनके साथ लोगों की भारी भीड़ थी। सभा-स्थल के पास पहुँचते ही भीड़ बेकाबू हो गई और पुलिस ने उन पर लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया। सुभाषचंद्र बोस पर भी लाठियाँ पड़ो। अनेक लोग घायल हुए। एक ओर पुलिस लोगों पर लाठियाँ बरसा रही थी तो दूसरी ओर जुलूस में शामिल स्त्रियों ने मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा दिया और स्वतंत्रता की घोषणा भी पढ़ी।

पुलिस ने सुभाष चंद्र बोस और उनके स्त्री-पुरुषों को पकड़कर लालबाज़ार जेल में डाल दिया। अंग्रेज़ी पुलिस द्वारा लाठियाँ बरसाए जाने से लोगों के सिर

फूट रहे थे किंतु उत्साह कम नहीं हो रहा था। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकार थोड़ी देर के लिए जुलूस टूट गया लेकिन थोड़ी ही देर में एक बड़ी भीड़ जुलूस में फिर शामिल हो गई। लेखक बताता है कि उनका एक साथी जिसका नाम बूजलाल गोयका था वह जुलूस में सक्रिय योगदान दे रहा था। वह झंडा लेकर वंदेमातरम् बोलता हुआ तेज़ी से मोनूमेंट की ओर दौड़ा तो एक अंग्रेज़ी घुड़सवार ने उसे ज़ोर से लाठी मारी। इसके बाद वह स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गया जहाँ उसे पकड़कर छोड़ दिया गया। इसके बाद वह लगभग दो सौ लोगों को जुलूस के रूप में लेकर लालबाजार की तरफ़ आया जहाँ उसे फिर गिरफ़्तार कर लिया गया। उस जुलूस में शामिल जानकी देवी एवं जमनालाल बजाज की पुत्री मदालसा को भी पकड़कर जेल में डाल दिया गया।

लेखक लिखता हे कि वह दिन कोकलातावासियों के लिए अपूर्व दिन था। उस दिन लगभग 105 स्त्रियाँ गिरफ़्तार हुईं और लगभग दो सौ लोग अंग्रेज़ी पुलिस की लाठियों से घायल हुए। अंग्रेज़ी सरकार का ऐसा विरोध कोलकातावासियों से पहले कभी नहीं किया था। उस दिन अंग्रेज़ी साम्राज्य के विरोध से कोलकातावासियों पर लगा यह कलंक धुल गया कि बंगाल में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित कोई कार्य नहीं हो रहा है। इस प्रकार 26 जनवरी, 1931 का दिन कोलकातावासियों के लिए अमर, अपूर्व और महत्वपूर्ण बन गया।

कबीर की साखियाँ

विधा-कविता/साखी

कवि-कबीरदास

प्रस्तुत साखियाँ कबीरदास जी द्वारा रचित हैं। इन साखियों में कवि ने विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है। कबीरदास जी ने अनुसार हमें ऐसे मधुर वचनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे दूसरों को भी सुख का अनुभव हो। उनका मानना है कि ईश्वर प्रत्येक हृदय में विद्यमान है, किंतु मनुष्य कस्तूरी के मृग की तरह उसे इधर-उधर ढूँढ़ता फिरता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अहंकार को नष्ट करना आवश्यक है और मन को पूर्ण एकाग्र करके ही ईश्वर को पाया जा सकता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए वे सभी प्रकार की वेशभूषा को अपनाने के लिए तैयार हैं।

कबीरदास जी कहते हैं कि सांसारिक लोग विषय-वासनाओं में डूबे रहते हैं। वे खाने-पीने और सोने में सुख अनुभव करते हैं किंतु ज्ञानी व्यक्ति जीवन की नश्वरता को देखकर दु:खी रहता है। ईश्वर के विरह में तड़पने वाला व्यक्ति अत्यंत कष्टमय जीवन व्यतीत करता है। उनका मानना है कि मनुष्य को अपने आलोचकों को भी अपने आस-पास ही रखना चाहिए। क्योंकि निंदा करने वाले व्यक्ति के सभी दोषों को दूर कर देते हैं। उनके अनुसार वेदों, उपनिषदों आदि ग्रंथों को पढ़कर कोई व्यक्ति विद्वान् नहीं हो सकता। जो व्यक्ति ईश्वर प्रेम के मार्ग पर

चलता है, वही विद्वान् होता है। ईश्वर प्रेम के प्रकाशित होने पर एक विचित्र-सा प्रकाश हो जाता है। उसके बाद तो मनुष्य की वाणी से भी सुगंध आने लगती है। अंत में कबीरदास जी अत्यंत क्रांतिकारी स्वर में कहते हैं कि ईश्वर-प्रेम के मार्ग पर चलना सरल नहीं है। इस मार्ग में चलने के लिए तो अपना सर्वस्व न्योछावर करना पड़ता है।

पाठ-पद

विधा-कविता/पद

कवयित्री-मीराबाई

मीराबाई द्वारा रचित इन पदों में कवयित्री ने भगवान् श्री कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति-भावना व्यक्त की है। वह श्री कृष्ण को सबकी पीड़ा को दूर करने वाला बताती है। मीरा श्री कृष्ण को संबोधित करते हुए कहती है कि हे श्री कृष्ण! आप सदैव अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करते हैं। आपने ही भरी सभा में द्रोपदी को अपमानित होने से बचाया था। भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए ही आपने नृसिंह अवतार लिया। इसके साथ-साथ आपने मगरमच्छ को मारकर ऐरावत हाथी के प्राणों की रक्षा की थी। मीराबाई श्री कृष्ण से अपनी पीड़ा भी इसी प्रकार दूर करने की प्रार्थना करती है।

दूसरे पद में मीरा स्वयं को श्री कृष्ण की सोविका के रूप में प्रस्तुत करती है। वह कहती है कि हे कृष्ण! मुझे अपनी सेविका बना लो। आपकी सेवा में रहते हुए मैं प्रतिदिन उठते ही आपके दर्शन पा सकूँगी और निरंतर वृंदावन की गालियों में आपकी लीला का गुणगान करूँगी। आपकी सेवा करते हुए आपके दर्शन करना और नाम-स्मरण करना ही मेरी कमाई होगी। हे श्री कृष्ण! आपके माथे पर मोर के पंखों का मुकुट, शरीर पर पीतांबर तथा गले में वैजयंती माला अत्यंत सुशोभित होती है। मैं लाल रंग की साड़ी पहनकर आधी रात को यमुना के तट पर आपके

दर्शनों की प्यासी खड़ी हूँ। आप मुझे दर्शन दीजिए। मीराबाई कहती है कि प्रभु श्री कृष्ण के दर्शनों के लिए उसका हृदय अत्यंत व्याकुल हो उठता है। वह बार-बार प्रभु श्री कृष्ण के दर्शन करना चाहती है।

पाठ- तताँरा-वामीरो कथा

विधा-कहानो

लेखक-लीलाधर मंडलोई

प्रस्तुत पाठ 'तताँरा-वामीरो कथा' अंदमान निकोबार द्वीप समूह के कार-निकोबार द्वीप की लोककथा पर आधारित है। यह तताँरा नामक युवक और वामीरो नामक युवती की प्रेमकथा है। तताँरा और वामीरो को आज भी इस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा से याद करते हैं।

प्राचीन काल में लिखित अंदमान और कार-निकोबार द्वीप समूह आपस में जुड़े हुए थे। वहाँ पासा नामक गाँव में तताँरा नामक एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहता था। वह बहुत ही नेक और मददगार था। सबकी सहायता करना वह अपना कर्त्तव्य समझता था। सभो उसे बहुत पसंद करते थे। उसके आत्मीय स्वभाव के कारण आस-पास के गाँव वाले भी उसे पर्व-त्योहारों पर विशेष रूप से आमंत्रित करते थे। तताँरा का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक था। वह अपनी पारंपरिक पोशाक के साथ अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रखता था। लोगों का विचार था कि लकड़ी की तलवार में दैवीय शक्ति थी।

एक दिन तताँरा सूर्यास्त के समय सुमुंद्री किनारे पर विचारमग्न बैठा था। तभी उसे पास ही से मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। वह उस गीत के मधुर स्वरों में डूब गया। जैसे ही उसकी तंद्रा टूटी वह उस गीत को गाने वाले को देखने के लिए

व्याकुल हो उठा। अंततः उसकी नज़र एक युवती पर पड़ी जो उस श्रृंगार गीत को गा रही थी। तताँरा उस युवती के अप्रतिम सौंदर्य को देखकर उसमें डूब गया। वह अपनी सुध-बुध खो बैठा और बार-बार उसे उस गीत को पूरा करने का आग्रह करने लगा। युवती ने उससे उसका परिचय पूछा किंतु तताँरा विचलित होने के कारण कुछ नहीं बता पाया। तताँरा ने उस युवती का नाम पूछा तो उसने अपना नाम लपाती गाँव की रहने वाली वामीरो बताया और चली गई। तताँरा उसे आवाज़ें लगाकर अपने बारे में बताता रहा और अगले दिन पुनः उसी चट्टान् पर आने का आग्रह करता रहा। वामीरो नहीं रुकी और तताँरा उसे जाते हुए निहारता रहा।

उधर वामीरो लगातार रोये जा रही थी। तताँरा का क्रोध लगातार बढ़ता गया। उसका हाथ अपनी तलवार पर गया और उसने तलवार निकाल ली। अपने क्रोध को शांत करने के लिए उसने तलवार को धरती में घोंप दिया और पूरी ताकत से अपनी तरफ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। लोगों ने देखा कि तलवार की जहाँ-जहाँ लकीर खिंची थी, वहाँ से धरती फटने लगी। तताँरा क्रोध में द्वीप के अंतिम सिरे तक धरती को काटता चला गया। वह जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँचा तो पूरा द्वीप दो टुकड़ों मं विभक्त हो गया था। दुर्भाग्य से तताँरा और वामीरो अलग-अलग हिस्से में रह गए। तताँरा को जब होश आया तो उसने देखा कि उसकी तरफ का द्वीप समुद्र में धँसना आरंभ हो गया था। उसने छलाँग लगाकर दूसरा सिरा थामना चाहा किंतु ऐसा न कर पाया और वामीरो-वामीरो चिल्लाता हुआ समुद्र की सतह की ओर फिसल गया। उधर वामीरो

भी तताँरा-तताँरा पुकार रही थी। अंततः तताँरा लहूलुहान होकर गिर पड़ा और पानी में बह गया। वामीरो उसके गम में पागल हो गई। उसने खाना-पीना छोड़ दिया और धंसे तताँरा को खोजती घंटों उस जगह पर बैठी रहती। कुछ समय पश्चात् वामीरो भी अचानक कहीं चली गई। लोगों ने उसे ढूँढने का प्रयास किया किंतु उसका कहीं पता नहीं चला।

लेखक कहता है कि तताँरा और वामीरो की यह प्रेम कथा अंदमान निकोबार के प्रत्येक घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का विचार ह कि तताँरा की तलवार से कार-निकोबार का जो दूसरा टुकड़ा हुआ वह लिटिल अंदमान ही है। तताँरा और वामीरो की त्यागमयी मृत्यु के बाद एक सुखद परिवर्तन यह हुआ कि निकोबार के लोग दूसरे गाँवों में भी वैवाहिक संबंध बनाने लगे थे।

पाठ- तीसरी कसम में शिल्पकार शैलेंद्र

विधा-लेख

लेखक-प्रहलाद अग्रवाल

प्रस्तुत पाठ 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' में लेखक के कवि एवं गीतकार शैलेंद्र द्वारा बनाई एकमात्र फ़िल्म 'तीसरी कसम' के विषय में बताया है। 'तीसरी कसम' फ़िल्म सन् 1966 ई. में प्रदर्शित हुई। इसमें मुख्य भूमिका शैलेंद्र के मित्र औश्र अभिनेता राजकपूर ने निभाई। इस फ़िल्म को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह फ़िल्म फणीश्वर नाथ रेणु की एक साहित्यिक रचना पर आधारित थी। इस फ़िल्म को कई पुरस्कारों में सम्मानित किया गया। यह फ़िल्म फणीश्वर नाथ रेणु की एक साहित्यिक रचना पर आधारित थी। इस फ़िल्म में कवि-हृदय शैलेंद्र की संवेदनशीलता स्वरूप दिखाई देता है। लेखक ने 'तीसरी कसम' फ़िल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता की संज्ञा दी है।

शैलेंन्द्र एक भावुक कवि थे। यद्यपि राजकूपर ने उनहें फ़िल्म की असफलता के ख़तरों से पहले ही आगाह कर दिया था फिर भी उन्होंने फ़िल्म बनाने का निर्णय नहीं छोड़ा। उनका फ़िल्म बनाने का उद्देश्य धन और यश पाना न होकर आत्म-संतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी। 'तीसरी कसम' 'फ़िल्म के सितारे, संगीत और गीत लोकप्रिय होने के बावजूद भी इसे कोई खरीददार नहीं मिल पाया। इसका कारण यह था कि इस फ़िल्म में पेश की गई संवेदना और

करुणा फ़िल्मों से पैसा कमाने वाले खरीददारों की समझ से परे थी। परिणामस्वरूप यह फ़िल्म कब आई और कब चली गई, किसी को पता ही नहीं चला।

लेखक कहता है कि शैलेन्द्र फ़िल्म इंडस्ट्री के तौर-तरीकों को भली-भाँति जानते थे, फिर भी उन्होंने अपनी मनुष्यता को नहीं खोया था। उनकी दृढ़ मान्यता थी कि दर्शकों को रुचि का सहारा लेकर निर्माताओं को निम्न-स्तरीय सामग्री फ़िल्मों में पेश नहीं करनी चाहिए। वे चाहते थे कि कलाकार भी दर्शकों की रुचियों का परिष्कार करें। 'तीसरा कसम' फ़िल्म में संवेदनशीलता अपनी चरम सीमा पर है। कहीं-कहीं तो नायिका आँखों से बोलती प्रतीत होती है। इसके अतिरिक्त फ़िल्म में मस्ती में डूबते और झूमते गाड़ीवान, नौटंकी की बाई में अपनापन खोजते गाड़ीवान और अभावों की ज़िंदगी जीने वाले लोगों के सुनहरी सपनों का सुंदर चित्रण किया गया है।

लेखक के अनुसार हमारी फ़िल्मों में बसे बड़ी कमज़ोरी लोक-तत्त्व का अभाव है। 'तीसरी कसम' फ़िल्म में लोक तत्त्वों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस फ़िल्म में दु:ख का भी सहज स्थिति में जीवन-सापेक्ष प्रस्तुत किया गया है। लेखक कहता है कि शैलेंद्रा के गीत भी अपनी अलग विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध रहे हैं। उनके गीतों में भावप्रवणता, सरलता और करुणा के साथ-साथ संघर्ष का स्वर भी दिखाई देता है। 'तीसरा कसम' फ़िल्म के तो सभी गीत भावप्रवणता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

लेखक कहता है कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म में राजकूपर का अभिनय बेजोड़ है। उन्होंने इस फ़िल्म में एक शुद्ध देहाती हीरामन नामक गाड़ीवान की भूमिका निभाई है। उनके द्वारा निभाई गई भूमिका इतनी उत्कृष्ट है कि वे कहीं भी अभिनय करते प्रतीत नहीं होते। अपितु वे हीरामन ही बन गए हैं। उनका महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह से हीरामन में ढल गया है। उन्होंने एक सरल-हृदय गाड़ीवान की भावनाओं को सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

'तीसरी कसम' फ़िल्म की पटकथा फाणीश्वर नाथ रेणु ने तैयार की थी। उनकी मूल रचना का छोटे से छोटा भाग और उसकी बारीकियाँ इस फ़िल्म में बड़ी सफलता से प्रस्तुत की गई है।

पाठ- पर्वत प्रदेश में पावस

विधा-कविता

कवि- सुमित्रानंदन पंत

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु में प्राकृतिक परिवेश में होने वाले परिवर्तनों का आकर्षक रूप से चित्रण किया है। बदलों और धूप की आँखमिचौनी के कारण प्रकृति प्रतिपल अपना रूप बदल रही है। शृंखला बद्ध ऊँचे पर्वत अपने ऊपर खिले हुए पुष्परूपी नेत्रों से अपनी तलहटी के सरोवर रूपी दर्पण में मानों अपनी शोभा देख रहे हैं। बहते हुए झरने पर्वत के गौरव का गान कर रहे हैं। पर्वत शिखरों पर खड़े हुए ऊँचे-ऊँचे वृक्ष शून्य आकाश की ओर देख रहे हैं। अचानक बादलों के घिर आने से कुछ भी दिखाई नहीं देता। ऐसा लगता है मानो बादल रूपी पंखों को फड़फड़ा कर पर्वत कहीं उड़ गया हो। केवल झरनों का शोर सुनाई देता है। ऐसा लगता है जैसे धरती पर आकाश टूट पड़ा हो। मूसलाधार वर्षा के कारण भयभीत होकर शाल के वृक्ष जैसे धरती में समा गए हों तथा कुहरा इतना अधिक बढ़ गया है मानों तालाब में आग लग गयी हो और वहीं से धुआँ उठ रहा हो। इस प्रकार से बादलों रूपी यान पर बैठकर इंद्र विभिन्न प्रकार के जादू के खेल-खेल रहा है।

पाठ-तोप

विधा-कविता

कवि - वीरेन डंगवाल

'तोप' कविता वीरेन डंगवाल द्वारा लिखी एक उद्देश्यपूर्ण रचना है। इस कविता के माध्यम से कवि के पूर्व की गई गल्तियों को न दोहराने का संदेश दिया है। कवि कहता है कि कंपनी बाग के प्रवेश द्वारा पर रखी तोप हमारी धरोहर के रूप में हमारे सामने विद्यमान है। यह वही तोप है सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अँग्रेज़ों द्वारा प्रयोग की गई थी। यह तोप हमें विरासत में मिली है। अतः इसकी बहुत देखभाल की जाती है तथा वर्ष में दो बार तो इसे खूब चमकाया जाता है। यह तोप इस कंपनी बाग में आने वाले लोगों के आकर्षण का भी केंद्र है। ऐसा लगता है मानों यह अपने बारे में बता रही हो कि पहले वह बड़ी शक्तिशाली थी और बड़े-बड़े वीरों की धज्जियाँ उड़ाने में सक्षम थी।

कवि कहता है कि अब यह तोप बिल्कुल निरर्थक हो गई है। अब कंपनी बाग में घूमने आए लड़के पर इस घुड़सवारी करते हैं। कभी-कभी चिड़ियाँ इस पर बैठी रहती हैं और आपस में बातें करती प्रतीत होती हैं। कई बार तो गौरैयें भी इसके भीतर घुस जाती हैं और इससे शरारतें करती हैं। वे गौरैयें मानों यह कह रही हों कि कोई तोप चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उसका मुँह एक न एक दिन अवश्य बंद हो जाता है। कवि इस कविता के माध्यम से सचेत करना चाहता है

कि हमें 'ईस्ट इंडिया कंपनी' जैसी कंपनियों को अपने देश में पाँव जमाने नहीं देना चाहिए। यदि ऐसा हो गया तो हमारा देश पुनः गुलाम हो सकता है।

पाठ-गिरगिट (केवल पढ़ने के लिए)

विधा -कहानी

लेखक- अंतोन चेखव

'गिरगिट' कहानी अंतोन चेखव द्वारा लिखित एक श्रेष्ठ कहानी है। यह सन् 1884 में लिखी गई थी। इसमें रूप की तत्कालीन कानून एवं न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है।

पुलिस इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव अपने सिपाही येल्दीरिन के साथ बाज़ार के चौराहे से गुजरता है। वह एक रिश्वतखोर, भ्रष्ट और चापलूस व्यक्ति है। अचानक उसे एक कुत्ते के किकियाने और एक व्यक्ति के 'पकड़ो, पकड़ो' चिल्लाने की आवाज़ सुनाई देती है। ओचुमेलॉव और येल्दीरीन उसी ओर बढ़ते हैं। वहाँ उन्हें पता चलता है कि ख्यूक्रिन नामक एक सुनार को किसी कुत्ते ने अँगली पर काट लिया है। उसने भी कुत्ते को पकड़कर वहीं गिरा रखा था। ओचुमेलॉव के पूछे जाने पर ख्यूक्रिन बताता है कि उसे इस कुत्ते ने काट लिया है। वह ओचुमेलॉव से कहता है कि वह उसे कुत्ते के मालिक से हरज़ाना दिलवाए। ओचुमेलॉव उसे दिलासा देता हे कि वह कुत्ते और उसके मालिक को इसकी सजा आवश्य देगा।

ओचुमेलॉव येल्दीरीन को कुत्ते के मालिक का पता लगाने को कहता है। तभी वहाँ खड़ी भीड़ में से कोई बताता है कि यह कुत्ता जनरल झिगालॉव का है। यह सुनते ही इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव एकदम बदल जाता है। वह उलटा ख्यूक्रिन को

ही दोष देने लगता है। वह कहता है कि उसकी अँगली कील आदि से छिल गयी होगी और वह कुत्ते के मालिक से झूठा हर्ज़ाना वसूलना चाहता है। सिपाही येल्दीरीन भी कहता है कि ख्यूक्रिन ने अवश्य ही अपनी जलती हुई सिगरे से कुत्ते की नाक जला दी होगी। इसकी कारण इसने इसे काटा है। ख्यूक्रिन बार-बार कहता है कि वह झूठ नहीं बोल रहा है, किंतु इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव और सिपाही पर कोई प्रभाव नहीं होता।

अभी यह बहस चल ही रही होती है कि सिपाही येल्दीरीन कुत्त को भली प्रकार देखकर कहता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का नहीं है। यह सुनकर ओचुमेलॉव फिर बदल जाता है। तब वह उस कुत्ते को भद्दा और मरियल बताता है। वह ऐसे बेकार और आवारा कुत्तों को मरवाने की बात भी कह देता है। थोड़ी ही देर में सिपाही पुनः कहता है कि शायद यह कुत्ता जनरल साहब का ही है। भीड़ से भी यह आवाज़ आती है कि कुत्ता जनरल साहब का है। इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव फिर बदल जाता है। वह फिर से ख्यूक्रिन को दी दोष देना शुरू कर देता है। वह कहता है कि यदि कुत्ते ने उसे काटा भी है तो इसमें सारी ग़लती उसकी अपनी हैं।

इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को बुरी तरह फटकारता है। उसी समय वहाँ से जनरल साहब का बावर्ची गुज़रता है। वह बताता है कि यह कुत्ता तो जनरल साहब के भाई का है। उनके भाई की ही 'बारजोयस' नरल के कुत्ते बहुत पसंद हैं। ओचुमेलॉव वह सुनकर प्रसन्नता का ढ़ोग करता है। वह उसे कुत्ते को जनरल

साहब में बावर्ची को सौंप देता है। वह उस कुत्ते को अति सुंदर डॉगी और खूबसूरत पिल्ला कहता है। बावर्जी कुत्ते को लेकर चला जाता है। वहाँ खड़ी भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँसने लगती है। तब इंस्पैक्टर ओचुमेलॉव ख्यूक्रिन को धमकाकर वहाँ से अपने रास्ते पर चला जाता है।

पाठ-अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले

विधा-निबंध

लेखक-निदा फ़ाजली

प्रस्तुत पाठ 'अब कहाँ दूसरे के दुःखी से दुःखी होने वाले' निदा फ़ाज़ली द्वारा लिखा एक प्रेरक लेख है। इसमें उन्होंने बताया है कि पहले मनुष्य में सभी जीव-जंतुओं के प्रति करुणा का भाव होता था। मनुष्य दूसरों के दुःख से दुःखी होता था किंतु आज मनुष्य के हृदय में दूसरे के दुःख को देखकर भी दुःख के भाव नहीं उमड़ते हैं। मनुष्य सारी धरती पर अपना अधिकार करता जा रहा है जिससे अन्य प्राणी बेघर होते जा रहे हैं।

लेखक के अनुसार पहले मनुष्य के हृदय में सभी प्राणिमात्र के प्रति करुणा का भाव होता था। ईसा ने 1025 वर्ष पूर्व हुए बादशाह सुलेमान तो चींटी तक की भी रक्षा किया करते थे। वे स्वयं को किसी के लिए मुसीबत न मानकर सभी प्राणियों पर करुणा बरसाते थे। एक अन्य घटना का उल्लेख करते हुए लेखक कहता है कि सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ हुए हैं। उनकी आत्मकथा में भी उनके पिता को सभी प्राणियों के प्रति करुणा की भावना का पता चलता है। वे लिखते हैं कि एक बार उनके पिता कुएँ से नहाकर लौटे तो भोजन करते समय उन्होंने अपनी बाजू पर काले-च्योंटे को रेंगते हुए देखा। वे तुरंत उस च्योंटे को

उसके घर कुएँ में छोड़ने चल दिए। उन्हें इस बात का दु:ख था कि उन्होंने एक घर वालेको बेघर कर दिया है।

प्राणिमात्र के प्रति करुणा की भावना का एक अन्य वर्णन नूह नाम के एक पैग़बंर से भी जुड़ा हुआ है। एक बार उन्होंने एक जख़्मी कुत्ते को दुत्कार दिया था। कुत्ते ने जवाब दिया कि कोई अपनी मर्ज़ी से जानवर या इंसान नहीं बनता है। सबको बनाने वाला तो खुदा है। तब नूह को अपनी गलती पर इतना पश्चाताप हुआ कि वे जीवन-भर एक कुत्ते को दु:ख पहुँचाने के दर्द से रोते रहे। लेखक कहता है कि सभी जीव-जंतुओं से प्रेम करने वाले और सबके प्रति करुणा का भाव रखने वाले ऐसे लोग नहीं हैं। अब तो मनुष्य ने सारी धरती पर अपना अधिकार करना शुरू कर दिया हे। उसके हृदय में पशु-पक्षियां, पर्वत, समंदरों के प्रति कोई करुणा का भाव नहीं है। मिल-जुलकर रहने की भावना भी धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है।

लेखक कहता है कि बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण मनुष्य ने समुद्र के पीछे सरकाना शुरू कर दिया हे। बस्तियाँ बसाने के लिए उसने पेड़ों को भी काटना शुरू कर दिया है जिससे प्रकृति में असंतुलन पैदा हो गया है। गर्मी में अधिक गर्मी पड़ना, भूकंप, बाढ़ और नए-नए रोगों का होना प्रकृति, के इसी असंतुलन का परिणाम है। लेखक कहता है कि प्रकृति तंग आकर कई बार अपना गुस्सा भी प्रकट करती है। कुछ वर्ष पहले मुंबई में समुद्र के तीन समुद्री जहाज़ों को अलग-अलग स्थानों पर फैंककर अपने गुस्से को व्यक्त भी किया था।

लेखक कहता है कि उसकी माँ के हृदय में भी सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा की भावना थी। उसकी माँ पेड़ों की पत्तियों, फूलों, दरिया, कबूतर और मुर्गे आदि में भी जीवन को महसूस करती थी और इन्हें तंग करने से मना करती थी। लेखक एक घटना का भी वर्णन करता है कि एक बार उसकी माँ ने कबूतर के अंडे को बिल्ली से बचाने की कोशिश की। इस कोशिश में वह अंडा उसके हाथ से गिकर टूट गया। उसकी माँ इस बात से इतनी दु:खी हुई कि उसने पूरा दिन कुछ भी खाया-पीया नहीं। उसे लगा कि उसके हाथ से पाप हो गया है और वह सारा दिन नमाज़ पढ़कर अपनी भूल पर पश्चाताप करती रही।

लेखक के अनुसार अब काफ़ी कुछ बदल गया है। मनुष्य लगातार बस्तियाँ बसाता जा रहा है जिससे जंगलों को काटा जा रहा है। जंगलों के काटने से इसमें रहने वाले अनेक जीव-जंतु बेघर हो रहे हैं लेकिन किसी को इसकी कोई चिंता नहीं है। लेखक कहता है कि उसके फ्लैट में भी कबूतरों ने जब घोंसला बनाया तो वह परेशान हो उठा था। उसकी पत्नी के कबूतरों को आने-जाने को रोकने के लिए खिड़की में जाली लगा दी थी। लेखक दु:ख प्रकट करता है कि जब जीव-जंतुओं के प्रति किसी के हृदय में करुणा का भान नहीं है। सभी प्राणियों से प्रेम करने वाले और दूसरों के दु:ख में दु:खी होने वाले अब इस संसार में नहीं हैं।

पाठ-दोहों का सार (बिहारी के दोहे)

विधा- दोहे/कविता

कवि- बिहारीदास

प्रस्तुत दोहे कविवर बिहारी द्वारा रचित ग्रंथ 'सतसई' से लिए गए हैं। इन दोहों में उन्होंने भक्ति, नीति तथा शृंगारिक भावों की सुंदर अभिव्यक्ति की है। बिहारी कहते हैं कि श्री कृष्ण के साँवले शरीर पर पीतांबर इस प्रकार सुशोभित हो रहा है मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकाल की धूप पड़ रही हो। दूसरे दोहे में कवि ने स्पष्ट किया है कि गर्मी की भयंकरता के कारण जंगल में साँप, मोर, हिरण और शेर अपनी शत्रुता को त्यागकर एक साथ छाया में एकत्रित हो गए हैं। उन्हें देखकर जंगल भी तपोवन के समान प्रतीत होता है। तीसरे दाहे में गोपियों का श्री, कृष्ण के प्रति प्रेम व्यक्त हुआ है। गोपियाँ श्री कृष्ण से बातें करने के लालच के कारण उनकी बाँसुरी छिपा देती हैं। श्री कृष्ण उनसे बांसुरी मांगते हैं तो वे मना कर देती हैं। मना करते समय उनका भौहों से हास्य प्रकट करना श्री कृष्ण को संदेह में डाल देता है और वे पुनः अपनी बाँसुरी माँगने लगते हैं। चौथे दोहे में नायक और नायिका की संकेतों में बातचीत का वर्णन है। नायक आँखों के संकेतों से नायिका से कुछ कहता है। नायिका उसे मना कर देती है। नायक उसके मना करने के ढंग पर रीझ जाता है तो नायिका झूठी खीझ प्रकट करती है। पुनः जब दोनों के नेत्र मिलते हैं तो दोनों प्रसन्न हो जाते हैं और एक-दूसरे को देखकर लजा

जाते हैं। इस प्रकार वे भीड़ भरे भवन में भी बातचीत कर लेते हैं। पाँचवें दोहे में कवि कहता है कि प्रेमियों के नेत्र मिलने पर उनमें प्रेम होता है। वे आपस में तो प्रेम के बंधन में बँध जाते हैं किंतु परिवार से छूट जाते हैं। उनके इस प्रेम को देखकर दुष्ट लोग कष्ट का अनुभव करते हैं। छठे दोहे में एक सखी द्वारा राधा को समझाने का वर्णन है। राधा श्री कृष्ण से रूठी हुई है। उसकी सखी उसे समझाती है कि उसके सौंदर्य पर तो उर्वशी नामक अप्सरा को भी न्यौछावर किया जा सकता है। वह तो श्री कृष्ण के हृदय में उसी प्रकार समाई है जिस प्रकार उर्वशी नामक आभूषण हृदय पर लगा रहता है। सातवें दोहे में कवि ने गर्मी की भंयकरता का वर्णन किया है। ज्येष्ठ मास में गर्मी के प्रचंडता इतनी अधिक है कि छाया भी छाया की तलाश में है और वह घने जंगल में और घरों में जाकर छिप गई है। आठवें दोहे मे विरहणी नायिका की विरह व्यथा को उसी के माध्यम से व्यक्त किया गया है। वह परदेस गए अपने प्रियतम को पत्र लिखने में असमर्थ है और उस तक संदेश भिजवाने में उसे लज्जा आती है। अतंतः वह अपने प्रियतम से कहती है कि तुम अपने ही हृदय से पूछ लेना, वह तुम्हें मेरे दिल की बात कह देगा। नौवें दोहे में कवि ने श्री कृष्ण ने अपने संकट दूर करने की प्रार्थना की है। दसवें दोहे में कवि कहता है कि बड़े लोगों के कार्यों की पूर्ति छोटे लोगों से नहीं हो सकती। विशाल नगाड़ों का निर्माण कभी भी चूहे जैसे छोट जीव की खाल से नहीं हुआ करता। अंतिम दोहे में बिहारी ने स्पष्ट किया है कि ईश्वर की भक्ति के

लिए बाह्य आडंबरों की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति सरल हृदय से ईश्वर क नाम का स्मरण करता है उसे सहज ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।

पाठ-मनुष्यता

विधा-कविता

कवि-मैथिलीशरण गुप्त

प्रस्तुत कविता 'मनुष्यता' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित श्रेष्ठ कविता है। इस कविता में कवि ने मनुष्य को परोपकार करने की प्रेरणा देने के साथ-साथ परस्पर एक-जुट होकर चलने का संदेश दिया है। कवि का मत है कि यह संसार मरणशील है किंतु जो मनुष्य अपने सद्गुणों के कारण माने के बाद भी अमर हो जाता है, उसी की मृत्यु सुमृत्यु है। जो मनुष्य केवल अपनी स्वार्थपूर्ति में लगे रहते हैं उनका आचरण तो पशुओं के समान है। सच्चा मनुष्य वही है जो दूसरों के कल्याण के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर करने के लिए तैयार रहता है। ऐसे उदार हृदयी का ही सम्मान होता है और उसके यश का मधुर ध्वनि चारों ओर गूँजती है। कवि ने परम दानी रंतिदेव, महार्षि दधीचि, कर्ण आदि की दानवीरता और त्यागशीलता का उदाहरण देकर संदेश दिया है कि परोपकार के लिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

कवि के अनुसार जिस मनुष्य के हृदय में सहानुभूति है, वह धनवान् है। महात्मा बुद्ध के करुणापूर्ण स्वभाव के कारण ही सारा विश्व उनके आगे नतमस्तक हो गया था। कवि मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहता है कि कभी भी धन के नशे में नहीं डूबना चाहिए। धन के लिए घमंड करना व्यर्थ है। सदा

एक-दूसरे की सहायता करने का प्रयास करते रहना चाहिए। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संता है। इस कारण सभी एक-दूसरे के भाई-बंधु हैं। हमारी आंतरिक एकता के स्पष्ट साक्षी हमारे वेद हैं। कवि पुनः कहता है कि सभी को एक होकर प्रसन्नतापूर्वक निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। एक होकर चलते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि परस्पर मेल जोल में कमी न आए और वैचारिक मतभेद भी न बढ़े। जो मनुष्य दूसरों की सहायता करता है उसका कल्याण अपने आप हो जाता है। अतः दूसरों की सहायता करते रहना चाहिए। वास्तव में सच्च मनुष्य वही है जो दूसरों की सहायता के लिए अपने प्राणों को भी न्योछावर करने को तैयार रहता है।

पतझर में टूटी पत्तियाँ (I. गिन्नी का सोना)

विधा-लेख

लेखक-रवींद्र केलेकर

इस प्रसंग में लेखक कहता है कि गिन्नी को सोना शुद्ध सोने से भिन्न होता है। इसमें तांबा मिला होता है। यह चमत्कार और अधिक मज़बूत होता है। शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के समान होते हैं। कुछ लोग शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिकता का मिश्रण करते हैं। ऐसे लोगों को 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' कहा जाता है। लेखक कहता है कि कुछ लोग गांधी जी को 'प्रक्टिकल आइडियालिस्ट' कहते हैं किंतु लेखक के अनुसार गांधी जी व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर ले जाते थे। इस प्रकार वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसका मूल्य बढ़ा दिया करते थे।

लेखक ने आदर्शवादियों और व्यवहारवादियों में से आदर्शवादियों को श्रेष्ठ बताया है। आदर्शवदी स्वयं भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते हैं और अन्य लोगों को भो उन्नति के मार्ग पर अपने साथ ले जाते हैं। समाज को शाश्वत मूल्यों की देन भी आदर्शवादियों की ही है।

पतझर में टूटी पत्तियाँ (II. झेन की देन)

विधा-लेख

लेखक-रवींद्र केलेकर

प्रस्तुत प्रसंग में लेखक कहता है कि जापानी लोगों को मानसिक बीमारियाँ अधिक हैं। इसका कारण यह है कि जापान में जीवन की गति बहुत तेज़ है। उनका मस्तिष्क निरंतर क्रियाशील रहता है जिससे वे तनाव और मानसिक रोगों का शिकार हो जाते हैं। लेखक बतताा है कि जापान में चाय पीने की एक विशेष विधि है जिससे मस्तिष्क का तनाम कम होता है। जापान मकें इस विधि को चा-नो-यू कहते हैं। लेखक अपने मित्रों के साथ 'ऐसी टी सेरेमनी' में जाता है। वहाँ का चाय पिलाने वाला उनका स्वागत करता है और अँगीठी सुलगाने से चाय प्याले में डालने तक की सभी क्रियाएँ अत्यंत गरिमापूर्ण ढंग से करता है।

लेखक कहता है कि इस विधि से चाय पीने की मुख्य विशेषता वहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण था। वहाँ तीन से अधिक लोगों को प्रवेश भी नहीं दिया जाता था। लेखक और उसके मित्रों को वहाँ प्याले में दो-दो घूंट चाय दी गई जिसे उन्होंने धीरे-धीरे बूँद-बूँद करके लगभग डेढ़ घंटे में पिया। तब लेखक ने अनुभव किया कि वहाँ का वातावरण अत्यंत शांत होने के कारण उनके मस्तिष्क की गति भी धीरे-धीरे धीमी हो गई थी। लेखक को लगा जैसे वह अनंतकाल में जी रहा है। लेखक को चाय पीते-पीते यह भी ज्ञान हुआ कि मनुष्य व्यर्थ में ही भूतकाल

और भविष्यकाल में उलझा रहता है। वास्तविक सत्य तो वर्तमान है जो हमारे सामने घटित हो रहा है। वर्तमान में जीना ही जीवन का वास्तविक आनंद उठाना है।

पाठ-कारतूस

विधा-कहानी

लेखक-हबीब तनवीर

'कारतूस' हबीब तनवीर द्वारा रचित एक श्रेष्ठ एकांकी है। इस एकांकी में उन्होंने हिंदुस्तान के सन् 1799 के वातावरण को सजीव कर दिया है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने उस समय तक हिंदुस्तान में अपना काफ़ी अधिकार जमा लिया था। इस एकांकी में वज़ीर अली नामक पात्र के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन हिंदुस्तानी जाँबाज़ों की वीरता का सुंदर चित्रण किया है।

एकांको का आरंभ ईस्ट इंडिया कंपनी की एक बटालियन के कर्नन कालिंज और उसके लेफ़्टीनेंट की बातचीत से होता है। कर्नल एक लेफ़्टीनेंट और कुछ सिपाहियों के साथ वज़ीर अली नामक एक जाँबाज़ हिंदुस्तानी को गरिफ्तार करने के लिए गोरखपुर के जंगल में खेमा लगाए बैठा है। कर्नल लेफ़्टीनेंट को बताता है कि वज़ीर अली तो रॉबिनहुड के समान वीर एवं साहसी है। वह अंग्रेज़ों से घृणा करता है और उन्हें हिंदुस्तान से बाहर निकालना चाहता है। ईस्ट इंडिया कंपनी वज़ीर अली को अवध के नवाब पद से हटाकर उसके स्थान पर सआदत अली को अवध का नवाब बना देती है। सआदत अली ऐशो-आराम चाहने वाला व्यक्ति है। वह अंग्रेज़ी सरकार की अधीनता स्वीकार कर लेता है और अपनी आधी जायदाद तथा दस लाख रुपये ब्रिटिश सरकार को दे देता है।

कर्नल लेफ़्टीनेंट को बताता है कि वज़ीर अली बहुत खतरनाक आदमी है। वह अफ़गानिस्तान के शासक से मिलकर अंग्रेज़ी सरकार की जड़ें हिलाना चाहता है। उसे ईस्ट इंडिया कंपनी के वकील को भी मार डाला था। वह बहुत निडर और साहसी है। अंग्रेज़ी सरकार उसे गिरफ्तार करना चाहती है, किंतु काफी समय से वह उसे पकड़ नहीं पा रही है। कर्नल बताता है कि वज़ीर अली की योजना हिंदुस्तान पर अफ़गानी हमला करवाकर अंग्रेज़ों की शक्ति कमज़ोर करना, अपनी सैन्य शक्ति बढ़ाकर अवध का नवाब पद हासिल करना और अंग्रेज़ों को हिंदुस्तान से बाहर निकालना है। जब कर्नल और लेफ़्टीनेंट बैठे इसी प्रकार की बातें कर रहे होते हैं, तभी उन्हें दूर स किसी घुड़सवार के आने की आवाज़ और धूल उड़ती दिखाई देती है। कर्नल अपने सिपाहियों को उस सवार पर नज़र रखने का आदेश देता है। थोड़ी ही देर में वह घुड़सवार कर्नल और लेफ़्टीनेंट के समीप आकर खड़ा हो जाता है।

घुड़सवार कर्नल कालिंज से मिलने की इच्छा प्रकट करता है। उसे कर्नल तक पहुँचाया जाता है। घुड़सवार कर्नल से कहती है कि वह उससे अकेले में कुछ बात करना चाहता है। कर्नल सिपाही और लेफ़्टीनेंट को बाहर भेज देता है। घुड़सवार कर्नल से पूछता है कि उसने जंगल में खेमा क्यों लगाया हुआ है और वह क्या चाहता है? कर्नल उसे बताता है कि वह वज़ीर अली को पकड़ना चाहता है। घुड़सवार कर्नल से कुछ कारतूस माँगता है और कहता है कि उसे ये कारतूस वज़ीर अली को पकड़ने के लिए चाहिए। कर्नन उसे दस कारतूस दे देता है। कर्नल

जब उससे उसका नाम पूछता है तो वह अपना नाम वज़ीर अली बताता ह। कर्नन उसका नाम सुनते ही हक्का-बक्का़ रह जाता है। वह उसकी दिलेरी देखकर सन्नाटे में आ जाता है। वज़ीर अली कारतूस लेकर घोड़े पर सवार होकर चला जाता है। उसके जाने के बाद लेफ़्टीनेंट अंदर आकर कर्नल से पूछता है कि वह कौन था तो कर्नल के मुख से यही निकलता है- एक जाँबाज़ सिपाही।

पाठ- मधुर-मधुर मेरे दीपक जल (केवल पढ़ने के लिए)

विधा- कविता

कवयित्री-महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा कृत 'नीरजा' से संकलित 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री की अनुभूति और चिंतन का सुंदर समन्वय है। कवयित्री ने 'दीपक' को परापकार, वेदना और त्याग की भावनाओं का प्रतीक मान कर यह प्रकट करना चाहा है कि वह अपने जीवन के कण-कण को दीपक की लौ की तरह जला कर प्रियतम के पथ को प्रकाशमान रखना चाहती है, सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए कवयित्री ने प्रतीकों का सुंदर प्रयोग किया है वह जीवन रूपी दीपक को संबोधित करती हुई कहती है कि हे मेरे मधुर दीपक! तू सदा जलता रह जिससे मेरे प्रियतम का पथ सदा प्रकाशित रहे, उन के पथ का अंधकार मिट जाए और मेरे पास आने में किसी प्रकार की असुविधा न हो! हे दीपक! तू धूप बन कर संसार में सुगांधि को फैला दे। तू स्वयं को जला का सारे संसार को दिव्य प्रकाश प्रदान कर। संसार में जितने भी शीतल, कोमल और नवीन पदार्थ हैं वे सभी तेरी जलन में जलना चाहते हैं। संसार रूपी पतंगा पछता कर कहता है कि वह तुझ से मिलकर क्यों नहीं जल पाया। अरे दीपक! तू हँस-हँस कर जल। तुम्हें जलने में किसी प्रकाश की पीड़ा अनुभव न हो क्योंकि संसार के अन्य सभी पदार्थ भी तो लगातार जलते रहते हैं। आकाश में असंख्य तारे बिना तेल के ही जल रहे

हैं। सागर पानी से भरा होने पर भी बड़वाग्नि (समुद्री आग) से अपने हृदय को जलाता रहता है। बादल, बिजली से निरंतर स्वयं को जलाता रहता है। कवयित्री दीपक से पुनः कहती है कि उसे जलने में पीड़ा का अनुभव नहीं करना चाहिए। पीड़ा में ही आनंद की प्राप्ति होती है अतः उसे चुपचाप निरंतर जलते रहना चाहिए।

पाठ-कर चले हम फ़िदा

विधा-गीत

गीतकार-कैफ़ी आज़मी

'कर चले हम फ़िदा' कैफ़ी आज़मी द्वारा लिखित एक देशभक्तिपूर्ण गीत है। इस गीत में उन्होंने देश की रक्षा करते हुए अपना बलिदान देने वाले सैनिकों के हृदय की आवाज़ को सुंदर अभिव्यक्ति दी है। सैनिकों ने देशवासियों को भी देश पर मर-मिटने की प्रेरणा दी है।

सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखे इस गीत में सैनिक कहते हैं कि वे तो देश की रक्षा करते हुए अपना बलिदान देकर इस संसार से जा रहे हैं। अब देश की रक्षा का दायित्व देशवासियों का है। सैनिक बताते हैं कि दुश्मन से लड़ते-लड़ते जब उनकी मृत्यु समीप थी तो भी उन्होंने दुश्मनों को खदेड़ना जारी रखा। उन्होंने देश की शान को बचाए रखने के लिए अपना बलिदान दे दिया। नवयुवकों का आह्वान करते हुए सैनिक कहते हैं कि देश पर अपने प्राणों को न्यौछावर करने का अवसर कभी-कभी ही आता है। अतः नवयुवकों को अपनी जवानो को देश की रक्षा में लगा देना चाहिए। सैनिकों की इच्छा है कि उनके शहीद होने के बाद भी देश पर बलिदान देने का सिलसिला निरंतर चलते रहना चाहिए। देश पर कुर्बान होने की खुशी तो जीत से भी बढ़कर है। अतः

देशवासियों को मौत की परवाह न करते हुए देश की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

सैनिक देशवासियों को उद्‌बोधित करते हुए कहते हैं कि दुश्मन रूपी रावण को रोकने के लिए उन्हें अपने खून से

पाठ-आत्मत्राण

विधा-कविता/प्रार्थना गीत

कवि-रवींद्रनाथ ठाकुर

'आत्मत्राण' कविता रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखी एक श्रेष्ठ कविता है। यह कविता मूल रूप से बंगला भाषा में लिखी गई थी जिसका हिंदी में अनुवाद किया गया है। इस कविता में कवि ने ईश्वर से उसे आत्मिक और मानसिक बल प्रदान करने की प्रार्थना की है। कवि ईश्वर से अपनी सहायता और कल्याण नहीं चाहता अपितु वह तो ईश्वर से ऐसा शक्ति को प्राप्त करना चाहता है जिससे वह अपनी समस्त मुसीबतों को संकटों से लड़ सके।

कवि ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह यह नहीं चाहता कि उसे मुसीबतों से बचाया जाए बलिक वह यह चाहता है कि जीवन में अनेक मुसीबतें आने पर भी वह उनसे न डरे। उसमें इतना साहस आ जाए कि वह सभी मुसीबतों का डटकर मुकाबला करे। कवि कहता है कि हे करुणामय ईश्वर, आप मेरे दु:खों और परेशानियों से दु:खी हृदय को चाहे सांत्वना न दे लेकिन मुझे इतनी शक्ति दें कि मैं दु:खों पर विजय प्राप्त कर सकूँ। जब मेरे जीवन में दु:ख आए और कोई मेरी सहायता करने वाला न मिले तो आप मुझे इतनी शक्ति दें कि मेरा आत्मविश्वास और पराक्रम बना रहे। कवि चाहता है कि जब उसे चारों ओर हानि

हो और लाभ के स्थान पर धोखा मिले तो ईश्वर उसके मन को दृढ़ता प्रदान करें। कभी भी उसका मन संघर्षों से घबराकर हार न माने।

कवि ईश्वर से पुनः प्रार्थना करता है कि हे ईश्वर, चाहे उसकी प्रतिदिन रक्षा न की जाए किंतु उसे जीवन रूपी सागर को पार करने की शक्ति अवश्य प्रदान की जाए। वह कहता है कि यदि उसके दुःखों के भार को कम नहीं किया जा सकता तो उसे उन दुःखों को सहने करने की शक्ति प्रदान की जाए। कवि प्रार्थना करता है कि वह सुख के दिनों में भी ईश्वर के प्रति विनम्र बना रहे और अभिमान में डूबकर ईश्वर को न भूले। अंत में कवि कहता है कि जब वह दुःख रूपी रात्रि में घिर जाए और सारा संसार उसे धोखा दे जाए तो भी उसे अपने ईश्वर पर कोई संदेह न हो। दुःख की घड़ी में भी उसका अपने ईश्वर पर विश्वास बना रहे।